• कविताएं...

अपना घर

एक-एक ईंट जोड़कर हमने,
बनाया अपना सुन्दर घर।
अपने घर में रहें सहज हम,
दूजों के घर लगता डर।
बच्चे हों तो करते रौनक,
किलकारी से गूंजे घर।
बिन बच्चों के मकां है केवल,
सूना जैसे हो खंडहर।
घर हो तो हम उड़ें आसमां
लग जाते हैं जैसे 'पर'
घर जैसा भी होता घर है।
जीवन उसमें करें बसर।
आओ रलमिल बनायें सारे।
इक दूजे का अपना घर...

■ दीनदयाल शर्मा

आंख-मिचौली

जल्दी आओ भैया चांद,
ले लो एक रुपैया चांद!
कितने अच्छे लगते हो जी,
सर्दी में तुम ठिठुर न जाना!
कर लो एक मढैया चांद!
चांदनिया में मुस्काते हो
सारे जग को नहलाते हो,
जरा इधर भी हंस दो प्यारे-
टेर रही है मैया चांद!
नीले नभ का घूंघट लेकर
सब तारों को न्योता देकर,
एक बार तो नाच दिखा दो-
धा-धिन, ता-ता-थैया चांद!
गरम दूध यह, और मलाई
चांदी की थलिया में लाई,
एक सांस में सब पी जाओ-
आओ, पां-पां पैयां चांद!

■ प्रकाश मनु

• चुटकुला...

पप्पू समंदर किनारे लेटा धूप ले रहा था..
एक अमेरिकन- आर यू रिलैक्सिंग?
पप्पू- नो डियर आई एम पप्पू...
थोड़ी देर बाद एक दूसरा अमेरिकन
वहां से गुजरा- आर यू रिलैक्सिंग?
पप्पू चिल्लाकर- कमीने, आई एम पप्पू!
फिर खिजलाकर पप्पू वहां से उठकर
दूसरी तरफ चला गया, जहां एक अमेरिकन
सुंदरी लेटी थी
पप्पू ने उससे पूछा- आर यू रिलैक्सिंग?
अमेरिकन सुंदरी- यस, आई एम रिलैक्सिंग...
पप्पू उसे एक तमाचा मार के बोला, यहां पड़ी है,
उधर तुझे तेरे घरवाले ढूंढ रहे हैं।

• जानकारी...

कोहिनूर हीरा

कोहिनूर हीरा बेशकीमती हीरों में से एक है। ये भारत का हीरा है, लेकिन इसे विदेश तक पहुंचाने का काम 13वें मुगल शासक अहमद शाह ने किया था। कुछ वक्त पहले जब ब्रिटिश के महाराजा चार्ल्स के ताजपोशी हुई तो राजतिलक के समय उनको जो मुकुट पहनाया गया उसमें ये हीरा जड़ा हुआ है। दरअसल कोहिनूर हीरा 1949 से ही ब्रिटिश के शाही परिवार के कब्जे में है। आइए इसके इतिहास के बारे में और इसे विदेश तक कैसे पहुंचाया गया इसके बारे में जानते हैं।

कोहिनूर को भारत में खोजा गया था और इंग्लैंड ले जाकर अंग्रेजों ने इस पर कब्जा कर लिया। इतिहास में इस हीरे के कई दावेदार बताए गए हैं जैसे अलाउद्दीन खिलजी, बाबर, अकबर और महाराजा रणजीत सिंह। लेकिन इसको करीब 800 साल पहले आंध्रप्रदेश के गुंटूर जिले में स्थित गोलकोंडा की खदान से निकाला गया था। उस वक्त इसको सबसे बड़ा हीरा माना गया था और इस वक्त इसका वजन 186 कैरेट था। इसके बाद कोहिनूर को कई बार तराशा गया और अब ये 105.6 कैरेट है और इसका वेट 21.2 कैरेट है। हालांकि इसे अभी भी दुनिया का सबसे बड़ा हीरा माना जाता है।

जब 800 साल पहले इसको खदान से निकाला गया तो इसके पहले मालिक काकतिय राजवंश थे। कहते हैं कि काकतिय ने इस हीरे को अपनी कुलदेवी भद्रकाली की बाईं आंख में लगया था। इसके बाद 14वीं शताब्दी में अलाउद्दीन खिलजी ने इसे काकतिय से लूट लिया था। इसके बाद पानीपत के युद्ध में बाबर मे जब आगरा और दिल्ली किले को जीता तो उसने इसे हथिया लिया था।

ईरानी शासक नादिर शाह ने 1738 में मुगलों पर हमला बोलकर उनको हराया और 13वें मुगल शासक अहमद शाह इसे छीनकर पहली बार भारत से बाहर लेकर गया। नादिर शाह ने मुगलों से मयूर तख्त भी छीन लिया और कहा जाता है कि उसने इस हीरे को मयूर तख्त में जड़वाया था। नादिर शाह की हत्या के बाद ये उनके पोते शाहरुख मिर्जा को मिला और अफगान शासक अहमद शाह दुर्रानी की मदद से खुश होकर उनको तोहफे में दिया था।

1813 में महाराजा रणजीत सिंह सूजा शाह को हराकर कोहिनूर को हथियाकर वापस भारत ले आए थे। हालांकि इसके बदले में रणजीत सिंह ने सूजा सिंह को 1.25 लाख रुपये भी दिए थे। इसके बाद 1849 में सिखों और अंग्रेजों के बीच युद्ध में सिखों का शासन खत्म हो गया और महाराजा गुलाब की बाकी संपत्ति समेत कोहिनूर भी क्वीन विक्टोरिया को दे दिया गया। फिर इसे बकिंघम पैलेस से लाकर रानी के ताज में जड़ दिया गया।

• गोनू झा

अन्ततः श्राद्ध का दिन आ गया। गोनू झा ने सुबह में ही अपने खेत से ईख कटवाकर मँगवा लिए थे और ईख को छोटे टुकड़ों में कटवा लिया था। पाँत दर पाँत लोग बैठे। गाँव के खेतों और सड़कों तक श्राद्ध का भोज खाने आए लोगों से पट गया।

पत्तल बिछ जाने के बाद गोनू झा सभी पत्तल में एक-दो ईख का टुकड़ा रखते चले गए और पाँत के अन्त में खड़े होकर हाथ जोड़कर बोले- 'कृपया अब भोजन ग्रहण करें।' उनकी इस बात पर भोज खाने आये लोग गुस्से में आ गए...

शुद्ध मिठाई का भोज

गतांक से आगे...

ग्रामीणों ने कहा- 'और नहीं तो क्या?'

उस समय गोनू झा चुप रह गए।

अंत्येष्टी सम्पन्न हो जाने के बाद सभी ग्रामीणों के साथ वे भी गाँव लौट आए। लेकिन पच्चीस गाँवों के भोज की बात उन्हें बेचैन कर रही थी। शुद्ध मिठाई का भोज... और पच्चीस गाँव के लोग!

अन्ततः गोनू झा ने नाई को बुलाया और अपनी माँ के श्राद्ध पर पच्चीस गाँवों को शुद्ध मीठा भोज के लिए आमंत्रण भेज दिया।

अन्ततः श्राद्ध का दिन आ गया। गोनू झा ने सुबह में ही अपने खेत से ईख कटवाकर मँगवा लिए थे और ईख को छोटे टुकड़ों में कटवा लिया था।

पाँत दर पाँत लोग बैठे। गाँव के खेतों और सड़कों तक श्राद्ध का भोज खाने आए लोगों से पट गया। पत्तल बिछ जाने के बाद गोनू झा सभी पत्तल में एक-दो ईख का टुकड़ा रखते चले गए और पाँत के अन्त में खड़े होकर हाथ जोड़कर बोले- 'कृपया अब भोजन ग्रहण करें।'

उनकी इस बात पर भोज खाने आये लोग गुस्से में आ गए और कहने लगे - 'पंडित जी, यह क्या? यह तो सरासर हमारा अपमान है। इस तरह कोई घर बुलाकर मेहमानों का अपमान करता है? शुद्ध मिठाई के भोज की बात कहकर आपने हम लोगों को बुलाया और अब गन्ने का टुकड़ा परोस रहे हैं?'

गोनू झा अपने दोनों हाथ जोड़कर विनम्रतापूर्वक बोले- 'आगत अतिथियो, आप सबों का मैं हृदय से स्वागत कर रहा हूँ। आप सोचें, मुझ गरीब ब्राह्मण से मेरे गाँव के वृद्धजनों ने पच्चीस गाँव के लोगों को शुद्ध मिठाई का भोज देने को कहा। मैंने सबसे अपनी गरीबी का वास्ता देकर पाँच ब्राह्मणों को भोजन करवाकर श्राद्ध की प्रक्रिया पूरी कर लेने का आग्रह किया था मगर किसी ने मेरी बात नहीं मानी... अन्त में मैंने शुद्ध मीठा भोज देना स्वीकार कर लिया। आप लोग भी स्वीकार करेंगे कि गन्ने से ज्यादा शुद्ध और मीठा कोई फसल हमारे खेतों में नहीं उपजता-आप लोग इसे ग्रहण करें और मेरी माँ की आत्मा की शान्ति के लिए भगवान से प्रार्थना करें।'

उनकी बात सुनकर पड़ोस के गाँव के लोगों ने उनकी विवशता समझी और रुचि से गन्ना चूसा और वहाँ से विदा होते समय गोनू झा से कहा -'आपने जो भी किया अच्छा किया... इससे आपके लोभी गाँववालों को भी अच्छा सबक मिल गया... अब वे लोग किसी की मजबूरी का फायदा उठाकर अपना पेट छप्पन पकवानों से भरने की कल्पना नहीं करेंगे।'

दूसरे गाँवों से आए लोगों की प्रतिक्रिया सुनकर गोनू झा के गाँव के उन लोगों का चेहरा उतर चुका था जिन लोगों ने गोनू झा को शुद्ध मिठाइयों का भोज कराने की सलाह दी थी।

-समाप्त

• रोचक...

गर्मियों में जानवर

गर्मियों के मौसम में कुछ जानवर ऐसे होते हैं कि जो लंबे वक्त के लिए सोने चले जाते हैं। ऐसे जानवर गर्मी और सूखे से बचने के लिए एस्टिवेशन की प्रक्रिया में चले जाते हैं। इस दौरान वे निष्क्रिय हो जाते हैं और उनकी गतिविधि कम हो जाती है। इस लिस्ट में पहला नाम मेढ़क का है। मेढ़क ज्यादा तेज गर्मी होने पर पानी में ठंडी जगह पर सोने के लिए चले जाते हैं और बरसात के वक्त बाहर निकलते हैं। ये पानी में ही छोटे-छोटे जंतुओं का शिकार करके खाते हैं। घोंघे का नाम भी इस लिस्ट में शामिल है। ये घोंघे अपने खोल में चले जाता हैं और छेद को कीचड़ से बनी एक स्किन से ढंक लेते हैं, जिससे कि अंदर नमी बनी रहती है और वो जिंदा रहते हैं। जो कछुए रेगिस्तान में पाए जाते हैं, वो ज्यादा गर्मी होने पर बिल में छिप जाते हैं। ये कछुए ज्यादा गर्मी से बचने के लिए बिल में घुसे रहते हैं और अपने नाखूनों से उसे ढंक लेते हैं। मगरमच्छ ठंडे खून वाला जानवर है, इसीलिए वो बहुत ज्यादा तापमान सहन नहीं कर पाते हैं। यही वजह है कि शरीर के तापमान को नियंत्रित करने के लिए वो गर्मियों में पानी में पड़े रहते ।

• पोलोनियम...

पोलोनियम एक धातु होती है, जो कि यूरेनियम के अयस्क में पाई जाती है। वैसे तो ये सीधे तौर पर शरीर में नहीं घुस सकता है, लेकिन इसके अल्फा कण ज्यादा टूर ट्रैवेल नहीं कर सकते हैं। अगर गलती से ये जहर शरीर के अंदर चला गया, इसके बाद तो दुनिया का कोई डॉक्टर इंसान की जान नहीं बचा सकता है। ये जहर बहुत ज्यादा खतरनाक होता है। इसकी ताकत का अंदाजा आप इसी बात से लगा सकते हैं कि अगर नमक के एक दाने के बराबर भी ये शरीर के अंदर चला जाए तो इंसान का काम खत्म। जैसे ही ये शरीर के अंदर घुसता है तो शरीर के बाल अपने आप झड़ने लग जाते हैं।